शरीर का अंग होगा आपका मेडिकल रिकॉर्ड

वह दिन दूर नहीं जब डॉक्टर आपका मेडिकल रिकॉर्ड जांचना चाहेगा और आप अपनी बांह फैलाकर कहेंगे, लीजिए, देख लीजिए मेडिकल रिकॉर्ड। ऐसा संभव होगा एक नई तकनीक के इस्तेमाल से जिसे अमेरिका में डॉक्टरों के सबसे बड़े संगठन अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन ने मंज़ूरी दे दी है।

इस रिकॉर्ड को चावल के दाने के आकार के एक यंत्र में संग्रहित करके सुई के जरिए त्वचा के नीचे उतारा जा सकेगा। इसका सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि व्यक्ति को, खास कर दीर्घकालिक बीमारियों से ग्रस्त मरीज़ों को अपने मेडिकल रिकॉर्ड को हर समय अपने साथ रखने की झंझट से मुक्ति मिल जाएगी। डॉक्टर जब चाहें इसे देख सकेंगे। इससे मरीज़ों की नियमित तौर पर साज-संभाल हो सकेगी। इसके अलावा आपात स्थिति में भी यह काफी उपयोगी साबित होगा। ऐसे मामलों में मेडिकल रिकॉर्ड की गैर मौजूदगी में व्यक्ति का सही समय पर और उचित इलाज नहीं हो पाता है। इसमें अक्सर व्यक्ति की जान भी चली जाती है। अगर डॉक्टर को मरीज़ के शरीर में ही उसका सारा चिकित्सकीय रिकॉर्ड मिल जाएगा तो त्वरित इलाज के द्वारा मरीज़ की जान बचाई जा सकेगी।

यह सारी जानकारी रेडियो फ्रिक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन (आरएफआईडी) टैग में होगी। आरएफआईडी ऐसी प्रणाली है जो सौ फीसदी पहचान सुनिश्चित करती है। इसे किसी भी उत्पाद, पशु या मनुष्य के साथ नत्थी किया जा सकता है। इसमें पहचान के लिए रेडियो तरंगों का इस्तेमाल किया जाता है। आरएफआईडी में दो हिस्से होते हैं। एक हिस्से में सूचनाओं का संग्रहण किया जाता है। इन सूचनाओं की प्रोसेसिंग के लिए इसमें इंटीग्रेटेड सर्किट्स लगे होते हैं। दूसरा हिस्सा एंटीना के रूप में होता है जो संकेतों को पकड़ने और उन्हें वापस रिलीज़ करने का काम करता है। इन आरएफआईडी टैग्स को कई मीटर दूर से भी पढ़ा जा सकता है।

इस तकनीक के साथ कुछ खतरे भी जुड़े हुए हैं। इससे व्यक्ति की गोपनीयता दांव पर लग सकती है। उसकी मेडिकल जानकारी, खासकर एड्स जैसी बीमारियों का पता चलने से सामाजिक दुष्प्रभाव गंभीर हो सकते हैं। इसके अलावा शारीरिक रूप से भी नुकसान की आशंका हो सकती है। इस यंत्र के अत्यंत छोटा होने की वजह से यह गलती से शरीर के अन्य हिस्सों में जा सकता है और नुकसान पहुंचा सकता है। साथ ही पूरी प्रणाली के इलेक्ट्रॉनिक होने से यह शरीर के लिए घातक साबित हो सकती है। अभी इस सम्बंध में आगे के परीक्षण किए जाने बाकी हैं।

इस बीच, अमेरिकन फूड एंड ड्रग्स एडमिनिस्ट्रेशन (एफडीए) ने पैसिव आरएफआईडी टैग्स की अनुमति दे दी है। लेकिन इन टैग्स को एक बार शरीर में प्रत्यारोपित कर दिए जाने के बाद इन्हें अपडेट नहीं किया जा सकेगा। इस प्रणाली का लाभ तभी होगा जब एक्टिव टैग्स की भी अनुमति दी जाएगी जिनमें मरीज़ की स्वास्थ्य सम्बंधी जानकारियां लगातार अपडेट की जा सकें। एफडीए मरीज़ों की स्वास्थ्य सम्बंधी गोपनीयता भंग होने की आशंका के चलते इसकी अनुमति नहीं दे रहा है। वह चाहता है कि पहले इसके लिए एक पहचान कोड बनाया जाए ताकि इस तक पहुंच सम्बंधित व्यक्ति की अनुमति से ही हो सके। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***